264
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1390/10121
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 264

Re

17-1

* बन्देमातरम् *

बलिदान की चिनगारी

चुने हुये राष्ट्रीय गाने शहीदों की जीवनी
फैशन की फट कार समाज सुधार के
ललित भजन ग़ज़लों का संग्रह।

ऐ हत्यारे मत कर स्वसभ्यता पर तू आज व्यर्थ अभिमान
ओ नृशंस निज न्याय कथा का मत कर झूठा गौरव गान
क्या अनित्य तू हो सकता है, हर कर देश भक्त के प्राण
देश प्रेम के सम्मुख वह तो तुच्छ समझता था निर्वाण

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—
पं० विश्वनाथ शर्म्मा, व काशीनाथ शर्मा
वैदिक औषधालय,
राजा दरवाजा काशी।

प्रथम बार] १९३१ [मूल्य ~)

नोटः—कोई भी महाशय इसे न छपावें अन्यथा
लाभ के बदले नुकसान होगा।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
8 - AUG. 1931

* बन्दे मातरम् *

* बलिदान की चिनगारी *

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No. 264
Date 6.12.71

* ॐ श्री कृष्ण चन्द्राय नमः *

माँ हमें बिदा दो जाते हैं हम विजय केतु फहराने आज ।
तेरी बलि वेदी पर चढ़कर माँ निज शीश कटाने आज ॥
नृत्य करेंगे रक्त कुंड में फिर अब रून्ड हमारे आज ।
अरू सिर गिर कर यही कहेंगे भारत भूमि हमारी आज ॥१॥
धरा धस कहीं शीघ्र पढ़ेगो टूट जायेंगे नभ के तार ।
विश्व काँपता रह जावेगा होगी माँ जब रण हुँकार ॥
तेरे चरणों में सिर धर कर जाते हैं करने रण रंग ।
फिर भय किसका है जब जननी तब आशीस हमारे संग ॥
विजय देवी आकर धोवेंगी तब चरणों को सज नव साज ।
पुलकित होकर शर्मा गाये भारत भूमि हमारी आज ॥

२

सुनाओ वादा न कल का मुझको।
स्वतन्त्रता को हम आज लेगें॥
न स्वर्ग की भी मुझे है चाहत।
फ़क़त हम अपना स्वराज्य लेंगे॥
अब हिन्द माता का घर ये आँचल।
मचल के बच्चे यह कह रहे हैं॥
कि कर्ण अर्जुन के सिर पै था जो।
वही पहनने को ताज लेंगे॥
जो फँस कै परतंत्रता में ३३ करोड़।
आज़ार सह रहे हैं॥
भविष्य डंके की चोट देकर।
यह देश भक्तो से कह चुका है॥
जब हिन्द को वो स्वराज्य देंगे तो।
पहले खून का स्वराज लेगें॥
कपट का पासा था फेंका शकुनी।
तो जीत बिलकुल लिया कुरु ने॥
मगर ये कहते कृष्ण मन में कि।
राज फिर धर्मराज लेगें॥
निकल के शायक़ के दिल से आहें।
प्रभु से वरदान है ये लाई॥

कि फूल गुलशन का लेलें गान्धी।
औ कांटों को बद मिज़ाज़ लेगें॥

३

दुश्मने जाँ अपने तो लंदन के दिलवर बन गये।
कालों के हम सर वह गेसुये मुनव्वर बन गये॥
रात दिन रहने लगा है फांउटेन पेन हाथ में।
बाबू जी अखबार के जब से एडीटर बन गये॥
ए० बी० सी० डी० याद जिसदम हो गई बाबू बने।
ग्रेजुएट गर हो गये पढ़कर के प्लीडर बन गये॥
आज कल के लोग कुछ कम लाट साहब से नहीं।
और ग्रामो फोन के अक्सर गवर्नर बन गये॥
पार्कों में जाय गुल सिर्फ एक सबजा रह गया।
इत्र भी सब उड़ गये जब से लेवेन्डर बन गये॥
औरतों पर मेम साहब का जो छाया पड़ गया।
रोटियाँ करने को बहरे उनके शौहर बनगये॥
अहले पतलू अब करेंगे बैठकर पेशाव क्या।
पढ़ लिया थोड़ी सी अंगरेज़ी तो मिष्टर बन गये॥
नाम बतलाते हुये माँ बाप का आती है शर्म।
आप तो खुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर बन गये॥

शर्मा ने खंडन किया जब मग़रवी तहज़ीव का।
लफ़ज़ जो निकले ज़वाँ से तेग़ खंजर बन गये॥

४

जब से ये चौपट चरण आये सफ़ाई हो गई।
थी भलाई जो यहाँ वह भी बुराई हो गई॥
मालपुआ तस्मै हलुआ तरातर की जगह।
लिव लिवाती तेल की फीकी मिटाई हो गई॥
धर्मधन बल बुद्धि का भारत सदा जो केन्द्र था।
उसकी भी औलाद अब पूरी गदाई हो गई॥
पूर्वजों की शुद्ध पीर पाटी पै ठोकर मारकर।
वेद गीता छोड़ इङ्गलिश की रटाई हो गई॥
कृष्ण अर्जुन भीष्म योधा द्रोणकी संतान के।
आँख पर पैनक तो चेहरे पर हवाई हो गई॥
था बड़ा गौरव उसी में जब बगल बंदी रही।
अब कमीजी कालरों में नेकटाई हो गई॥
बाप जीते ही रहें मर जाय तो परवाह क्या।
आप बाबू बन गये मूछें सफ़ाई हो गई॥
पाउडर पफ मल चले हैं नूर टपकाने मगर।
गाल में बंगाल की खाड़ी सी खाई हो गई॥
जब इन्होंने और सोचा कुछ कमी महसूस की।

दुमकटे दो चार कुत्तों की मिताई हो गई ॥
पाथ जामा खोल कर पतलून का पीछा किया ।
तब तरक्की धोबियाँ की भी धुलाई हो गई ॥
होटलों में चाय बिस्कुट मिश्कियाँ उड़ने लगी ।
रोग बढ़ कर मौत की पूरी देवाई हो गई ।

५

रोते हुये गाना हुवा ।

इन शहीदों की मृत्यु से जब देश दीवाना हुवा ॥
अब दुरंगी चाल का मुश्किल भी रह जाना हुवा ।
नित नया हो ज़ुल्म हमपर उनका तो कहना हुवा ॥
हम शहीदों ने वतन हो उनका मन माना हुवा ।
दिल्लगी यह है अजब कि न्याय तक की बू नहीं ॥
व्यर्थ ही झूठी अदालत से न्यान चिल्लाना हुआ ।
इन ठगों के है ठगी का ठाट भी तरक़ीब का ॥
रात में क्या दिन दहाड़े लूट मचवाना हुवा ।
हर तरह जकड़े गये हैं 'ला' बला के जाल में ॥
अन्धेर है इन शेरों की फाँसी दिल बाना हुवा ।
दुर्ग हैं दानव दलों का डाँकुओं का है गरोह ॥
रहज़नी से रंग अपना इनका दिख लाना हुवा ।

क्या करूँ लाचार हूँ प्रतिकार मच जाता मगर॥
खून पीने को मेरा भाई ही वेगाना हुवा।
ज़ुल्म से लाखों करोड़ों तडफड़ाते मर मिटे॥
इन शहीदों का व्यथा रोते हुये गाना हुआ।

६

क्या समझते हो कि हम फाँसी का डर करते हैं।
हमजो करते हैं उसे होके निडर करते हैं॥
तीर तलवार तवर तोप की ताक़त क्या है।
सर को धर करके हथेली पै सफर करते हैं॥
आग पानी में लगा देना कोई बात नहीं।
सच तो यह है कि हमी लोग सबर करते हैं॥
सब सितम सहके भी चुप चाप रहा करते हैं।
तो भी तुर्रा हैं कि हम लोग ग़दर करते हैं॥
खौफ क्या है न इसे ख्वाब में हमने समझा।
काल के काल का हर काल कवर करते हैं॥
एक से एक वशर रोज़ मरा करते हैं।
हम जो मरते हैं तो औरों को अमर करते हैं॥
क़ौम के काम में गर काम ही आया तो क्या।
ऊँचा सिर कौम का हो नज़र ये सर करते हैं।

मेरी हवा में रहेगी ख्याल की बिजली ॥
खुश रहो अहले वतन हमतो सफर करते हैं।
रंग दिख लायेगा ये खून हमारा इनको ॥
ग़म नहीं वेखता वह कत्ल अगर करते हैं।
सूख जाये न कहीं पौधा ये आज़ादीका ॥
खून से अपने इसे इसलिये तर करते हैं।

कलामे शहीद।

७

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आया तो क्या।
दिल की बर्बादी के बाद उनका पयाम आया तो क्या ॥
काश अपनी ज़िन्दगी में हम ये महशर देखते।
बरसरे तुर्वत कोई मह शेर खुराम आया तो क्या ॥
मिट गई जब सब उम्मीदें मिट गये सारे ख़याल।
उस घड़ी गर नामा वर लेकर पयाम आया तो क्या ॥
ऐ दिले नाकाम अबतो मिट जा कूये यार में।
फिर मेरी नाकामियों के बाद काम आया तो क्या ॥
आख़िरी शवदीद के काबिल थी बिस्मिल की तड़प।
सुबह दम गर कोई बालाये बाम आया तो क्या ॥

८

अरूज़े कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा।
रिहा सय्याद के हाथों से अपना आशियां होगा॥
चखा देंगे मज़ा बर्बादिये गुलशन का गुलचीं को।
बहार आ जायगी जिस दम कि अपना आशियां होगा॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहां औ तू कहाँ होगा॥
शहीदों की चिताओं पर जुटेंगे हर बरस मेले।
वतन पै मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥
कभी वो दिन भी आयेगा जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही ज़मीं होगी औ अपना आशियां होगा॥

९

अगर स्वराज्य भारत में तुम्हे इस साल है लाना।
तो हरगिज चाल बाज़ों के न अब तुम चाल में आना॥
विदेशी वस्तु को दिल से करो अब दूर ऐ मित्रों।
तुम अपने देश का धन अब विदेशों में न भिजवाना॥
अगर आपस के झगड़े हों तो उनको तय करो घर में।
कचहरी फौजदारी में न हरगिज माल मे जाना॥
अगर यह वक्त हाथों से गँवाया तो समझ लेना।

तो पशुओं की तरह सदहा तुम्हें है ठोकरें खाना ॥
सदा जकड़े रहोगे फिर गुलामी की जंजीरों में।
जो छोड़ा ध्येय अपना तो है मुश्किल पार ही पाना ॥
मनाने को हमें करते हैं बैठक गोल टेबुल की।
वतन आज़ाद अब करलो न गैरों के सहो ताना ॥

१०

खुलता ही नहीं राज़ ये मुझ पर तहे खंजर।
सर है तहे खंजर कि मुकद्दर तहे खंजर ॥
जब खींच के लाया वह सितमगर तहे खंजर।
तड़पा किया मेरा दिले मुज़तर तहे खंजर ॥
जल्लाद की सूरत पै कोई दिल से फिदा है।
देता है कोई जान तड़प कर तहे खंजर ॥
अबरू कि भी उल्फत हमें गेसू की भी उल्फत।
डरते नहीं हम बाल बरा वर तहे खंजर ॥
मक़तल से ये उठकर नहीं जाते नहीं जाते।
जां बाज़ बिछा देते हैं बिस्तर तहे खंजर ॥
दम तोड़ के किस घाट उतरते हैं खबर क्या।
दरियाये मुहब्बत के शिनावर तहे खंजर ॥
दावा है मेरा कत्ल गहे नाज़ में कातिल।
तड़पे कोई बिस्मिल के बराबर तहे खंजर ॥

११

इन शेरों के खूँ का असर देख लेना।
किया ज़ुल्म तुमने बहुत देख लेना॥
हमारा भी क़लबो जिगर देख लेना।
ये हैं वे वफ़ा या फ़िदाये वतन है॥
अभी क्या है तुम वक्त पर देख लेना।
मुबारक़ हो शमशेर तुमको उठाना॥
तो हमको भी सीना सिपर देख लेना।
हरा होगा ज़ालिम न किश्ते तमन्ना॥
तशदुद का अपने असर देख लेना।
बिगड़ जाएगा बागे आलममें एक दिन॥
निज़ाम अपना औ बे खबर देख लेना।
डुबा देगी एक दिन किश्ती तुम्हारी॥
मेरी चश्मे तर की लहर देख लेना।
तेरी शाख़ सर सब्ज़ होगी न क़ातिल॥
इन शेरों के खूँ का असर देख लेना।
उसे वे खता हुस्ने कातिल ने मारा॥
कोई ज़ुर्म था आँख भर देख लेना।
उसे तुम वतन का फ़िदाई समझना॥
जिसे खुश्क़ लब चश्म तर देख लेना।
जो तक़लीद मगरिब किया तुमने शर्मा॥
तो मिट्टी मे अपने ही ज़र देख लेना।

(हथियार खद्दर का)

१२

अवस दुश्मन बना है चर्खें ना हजार खद्दर का।
किसी के रोके अब रूकता नही परचार खद्दर का॥
नसीबा हिन्द में क्यों कर न हो वे दार खद्दर का।
जब जवाहर लाल के कंधों पै हो ब्यापार खद्दर का॥
खुदा मालूम क्या जादू भरा है इसके तारों में।
कि आशिक हो गया हर काफिरा दीदार खद्दर का॥
बहद से अब शहीदों के यही आवाज आती है।
करो प्रचार खद्दर का करो प्रचार खद्दर का॥
ज़मीं में गड़ गये खुद शर्म से वद ख्वाह कर २ कर।
निकाला गाँधी ने क्या है अजब हथियार खद्दर का॥
पटेल और मालवी दोनों सरे मैदान निकले हैं॥
करेंगे मुल्क में घर २ वो अब परचार खद्दर का।
नहीं अब "मोलवी" औ "मालवी" में फर्क़ कुछ बाकी॥
कि करता है इन्हे हम रिश्ता हर एक तार खद्दर का।
सबाहत मिलती है इसमें बहुत रूख़ासार जाना की॥
सुना है लेते हैं पे शोख़ आशिक़ प्यार खद्दर का।

अभी गर्दन पै खंज़र और ऐ जल्लाद रहने दे।

१३

तसव्वुर * दिल कादिल में पे सितम ईजाद रहने दे॥

बहुत सी रह नहीं सकती ज़रासी याद रहने दे।
चमन में यादगारे बुलबुले नाशाद रहने दे॥
नशेमन शाख़े-गुल पर ऐ मेरे सैयाद रहने दे।
कोई दिल थाम कर कहता है, क्या इसकी ज़रूरत है॥
कलेजा मुँह को आजयेगा तू फ़रियाद रहने दे।
मज़ा मिलने लगा कुछ कुछ मुझे शौक़े शहादत का॥
अभी गर्दन पै ख़ञ्जर और ऐ जल्लाद रहने दे।
मज़ा तो जब है वह बेदर्द भी कहदे यह घबरा कर॥
सुनी जाती नहीं अब दिलजली फ़रियाद रहने दे।
जो मैं उनसे कभी ज़िक्रे दिले नाशाद करता हूँ॥
तो वह कहते हैं ऐसी बेतुकी रुदाद रहने दे।
खुदा की शान मैं मरता हूं जिन पर अब वह कहते हैं॥
मुहब्बत अपनी तू ए बिसमिले नाश रहने दे।

१४

न पूछो ऐरे गैरों को कि हम क्या करके छोड़ेंगे।
किया है हमको नंगा हम भी नंगा करके छोड़ेंगे॥
हमेशा दाव देकर हमसे बाज़ी जीत लेते है।
दवाई आने दो हम भी दिवाला करके छोड़ेंगे॥
ग़ज़ब की बेड़ियां डाली हैं जो ज़ालिम ने पैरों में।
इसी झंकार से हम हश्र बरपा करके छोड़ेंगे॥

न छोड़े ज़ीते जी दुश्मन का पीछा हम वो काले हैं।
अगर छोड़ेंगे दुश्मन को तो मुर्दा करके छोड़ेंगे॥
अज़ीजों फिर से चलने दो यहाँ गाँधी के चर्खों को।
इसी चर्खे से हम दुश्मन का चर्खा करके छोड़ेंगे॥

बूढ़े का ब्याह

१५

ग़ज़ब है कैसा! यह बूढ़ा बाबा, बना है बन्ना, नया निराला।
मुड़ा के मूछें, खिज़ाब मल के, बना है कैसा जवान आला॥
झुकी कमर है न देह वश में, न दाँत मुँह में, घुसी हैं आँखें।
सजा बतीसी, लगा के काजल, चला है लेने अबोध वाला॥
क़ज़ा का फ़र्मान आ चुका है, क़बर में लटके हैं पर इसके।
मगर जवानी का हौसला है, निकल अक़ल का गया दिवाला॥
गो घर में इसके जवान बहुएँ; जवान लडकी व पोते-पोती।
भरी हुई है, मगर त्रिया बिन, समझता घर को उजाड़ काला॥
हया, शरम और लोक-लज्जा को, पी गया है दया-धरम तज।
वरेगा जा करके एक मासूम, भोली कन्या जो ग्यारह साला॥
हज़ार लानत है उन निलज्जों को, जो बने हैं बराती इसके।
कचौड़ी लड्डू की सीर्फ़ खुशबू पै, दीनों ईमान बेच डाला॥
वह पापी पंडित, अधर्मी नाई, कि जिनकी कोशिश से होगी शादी।

ज़मीं पै हैं वे नरक के कीड़े, जिन्होंने लाखों घरों को घाला ॥
टके की खातिर ये खोल पत्रा, बताते सायत कराते शादी।
अधर्मी, मक्कार, धूर्त, पाजी, लगाए टीका और पहने माला ॥
यहीं पै दो छोड़ इन कमीनो को, आगे का माजरा सुनो अब।
कि बुड्ढे बुड़बक ने जिसतरह से, ससुरके घरमें किया उजाला॥
जो पहुँचा माँड़वे के नीचे बूढ़ा, गिरा पुरोहित पै लड़ खड़ाकर।
उठाके दो चाकरों ने फौरन् बरासनी पर उसे बिठाला ॥
कहा पुरोहित ने आचमन को, तो बूढ़ा छूने लगः चरण को।
यह देख सब हँस पड़ी लुगाई औ बोली-'ऊँचा सुने हैं लाला॥'
लगा जो फिरने अबोध बच्ची के साथ बुड्ढा उचक के भाँवर।
तो बाबा पोती की देख शादी हुआ बहुत शोर-गुल-घुटाला ॥
चलीं लुगाई बिगड़ घरों को बुलावे में जो थीं कि आई घरमें।
ये बाप-माँ है कि हैं क़साई ? औ बुड्ढा दूल्हा भी है रिज़ाला ॥
'दिनेश' यों व्याह करके बुड्ढा, जिया फ़क़त पाँच साल तकही।
मरा बना करके एक विधवा, दहकती दुखसे जो मिस्ल ज्वाला॥

श्रीदिनेश प्रसाद वाथम

* समाप्त *

Printed by M. P. Gupta at the
Shree Press, Sati Chautra, Benares City.